केवल निजी
वितरण हेतु

हम एक हैं

वर्ष १५
अंक ३
सितम्बर - दिसम्बर
२००७

सम्पादकीय (पृ...2)
आगामी तिमाही के कार्यक्रम (पृ...2)
शिचिमेन्ज़ान - 1 (पृ...3)
अनुभव सागरपार से (पृ...4-5)
रेयूकाई समाचार (पृ...6-8)
कमल सूत्र से दृष्टांत (पृ...9)
सोकाइम्यो (पृ...10-11)
ओदाइमोकु (पृ...11)
सूत्रपाठ मेरा प्रेरणास्रोत (पृ...12-13)
श्रीमति किमी कोतानी के विचार (पृ...14)
रेयूकाई अतुल्नीय कैसे है (पृ...14)
आओ जापानी सीखें - 15 (पृ...15)
रेयूकाई अभ्यास (पृ...16)

आईए अपने वंशजों को सौंपें एक श्रेयतर समाज!

आध्यात्मिक सहचर्य संस्था व रेयुकाई इंडिया के सभी सदस्यों को बहुत शुभकामनाएं !!

हम श्री तादाशी मात्सुशिता का अपने प्रवासी निदेशक के रूप में स्वागत करते हैं।

हमें विश्वास है कि वे भारत में हमें अपने लिए निर्धारित किए लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक होंगे। हम आध्यात्मिक या प्रशासनिक, सभी मामलों में, उनके मार्गदर्शन की अपेक्षा करते हैं।

आध्यात्मिक सहचर्य संस्था द्वारा आरम्भ किये गये नए सदस्यता अभियान के फल अब हमें प्राप्त होने लगे हैं और हमारी सदस्य संख्या में वृद्धि होती नज़र आ रही है। नए सदस्यों का स्वागत करने के साथ ही साथ हम अपने मौजूदा सदस्यों एवं नेताओं से आग्रह करते हैं कि वो इस उत्साह को क़ायम रखते हुए आने वाले दिनों में और अधिक सदस्य बनाने का प्रयास करते रहें।

अपने पाठकों को रेयूकाई रूचि की महत्वपूर्ण जगहों के बारे में जानकारी देने की अपनी कोशिशों को बरकरार रखते हुए इस अंक से हमने ''शिचिमेन्ज़ेन'' पर एक नया धारावाहिक आरम्भ किया है।

साथ ही हम अपने आगामी अंक से ''जापानी लिपि लेखन अभ्यास'' आरम्भ करने जा रहे हैं। मुझे विश्वास है कि पाठक हमारे इस प्रयास से सहमत होंगे। विस्तृत पाठ्य सामग्री हमारी वैबसाइट पर भी शीघ्र ही उपलब्ध कराई जाएगी।

अधिक जानकारी के लिए कृपया अपनी वैबसाइट www.reiyukaiindia.org पर जाएं। इस पत्रिका और वैबसाइट के लिए अधिकाधिक सामग्री प्रदान करने हेतु मैं आप सब से आग्रह करता हूँ।

मैं आने वाले महीनों के लिए सभी सदस्यों को शुभकामनाएं देता हूँ। अपनी प्रतिबद्धता पर बने रहें और आइए हम सब यह पुनः संकल्प करें कि हम अपने बच्चों के लिए इस संसार को एक बेहतर स्थान बनाएंगे।

नमो म्यो हो रें गे क्यो।

सम्पादक

आगामी चौमासे के कार्यक्रम

दिल्ली में भावी चौमासे के आयोजनः

16 सितम्बर 2007 दिल्ली कार्यालय में सदस्यों हेतु तृतीय रविवासरीय आम सभा।

21 अक्तूबर 2007 दिल्ली कार्यालय में सदस्यों हेतु तृतीय रविवासरीय आम सभा।

18 नवम्बर 2007 दिल्ली कार्यालय में सदस्यों हेतु तृतीय रविवासरीय आम सभा।

16 दिसम्बर 2007 दिल्ली कार्यालय में सदस्यों हेतु तृतीय रविवासरीय आम सभा।

बोकारो में भावी चौमासे के आयोजनः

2, 9, 16, 23 व 30 सितम्बर 2007 बोकारो कार्यालय में सदस्यों हेतु रविवासरीय आम सभा।

7, 14, 21 व 28 अक्तूबर 2007 बोकारो कार्यालय में सदस्यों हेतु रविवासरीय आम सभा।

4, 11, 18 व 25 नवम्बर 2007 बोकारो कार्यालय में सदस्यों हेतु रविवासरीय आम सभा।

2, 9, 16, 23 व 30 दिसम्बर 2007 बोकारो कार्यालय में सदस्यों हेतु रविवासरीय आम सभा।

गया में भावी चौमासे के आयोजनः

16 सितम्बर 2007 गया कार्यालय में सदस्यों हेतु तृतीय रविवासरीय आम सभा।

21 अक्तूबर 2007 गया कार्यालय में सदस्यों हेतु तृतीय रविवासरीय आम सभा।

18 नवम्बर 2007 गया कार्यालय में सदस्यों हेतु तृतीय रविवासरीय आम सभा।

16 दिसम्बर 2007 गया कार्यालय में सदस्यों हेतु तृतीय रविवासरीय आम सभा।

फ़र्रुखाबाद में भावी चौमासे के आयोजनः

16 सितम्बर 2007 फ़र्रुखाबाद कार्यालय में सदस्यों हेतु तृतीय रविवासरीय आम सभा।

21 अक्तूबर 2007 फ़र्रुखाबाद कार्यालय में सदस्यों हेतु तृतीय रविवासरीय आम सभा।

18 नवम्बर 2007 फ़र्रुखाबाद कार्यालय में सदस्यों हेतु तृतीय रविवासरीय आम सभा।

16 दिसम्बर 2007 फ़र्रुखाबाद कार्यालय में सदस्यों हेतु तृतीय रविवासरीय आम सभा।

रेयूकाई की दुनिया

शिचिमेन्ज़ान-१

मिनोबु पर्वत के पश्चिम में स्थित 1989 मीटर ऊंचा पावन पर्वत शिचिमेन्ज़ान, निचिरेन शोनिन की मृत्यु के बाद उनके शिष्यों द्वारा कामाकुरा काल के अंत में खोला गया। शिचिमेन्ज़ान, बौद्ध धर्म के निचिरेन सम्प्रदाय या भिक्षुओं के प्रशिक्षण स्थान के रूप में जाना जाता है। कमल सूत्र के पालनकर्ताओं के लिए एक रक्षक आत्मा के रूप में शिचिमेन दाएम्योजिन, उस पर्वत की चोटी के समीप केइशिनिन मन्दिर में प्रतिष्ठापित है।

रेयुकाई के जन्मदाता श्री काकुतारो कूबो, निचिरेन शोनिन के प्रति बेहद आदर रखते थे, जिन्होंने कमल सूत्र के मार्गदर्शक पालनकर्ताओं के रूप में बौद्ध धर्म के निचिरेन सम्प्रदाय की स्थापना की और यह दृढ़ धारणा रखी कि ''मैप्पो विश्व को बचाने के लिए इस राष्ट्र में सभी को कमल सूत्र का अनुसरण करना होगा।'' उनकी इस पावन परोपकारिता को ध्यान में रखते हुए तथा सदस्यों के लिए अभ्यास के तौर पर भी, श्री कूबो ने 1924 से शिचिमेन पर्वत पर अपने अभ्यास आरंभ किए।

उन्होंने शिचिमेन्ज़ान की चोटी पर सूर्योदय को सर्वप्रथम देखा और राष्ट्र व संपूर्ण विश्व में शांति के लिए कार्य करने का प्रण किया। यह वार्षिक अभ्यास चरण लगभग प्रत्येक वर्ष आयोजित किया जाता था पर द्वितीय विश्व युद्ध के कारण 1941 से कई वर्षों तक रोक दिया गया। अस्वस्थ पड़ जाने के बाद भी, उन्होंने कभी भी जापान के बारे में चिंता करनी नहीं छोड़ी और विश्व शांति की आशा की। 1944 में वे आध्यात्मिक लोक में प्रस्थान कर गए और भावी कार्यों को रेयुकाई की प्रथम अध्यक्षा श्रीमती किमी कोतानी के सुपुर्द कर दिया।

- अगले अंक में क्रमगत

व्यक्तिगत अनुभव सागरपार से

बैठकों में मैंने देखा कि कैसे सभी अपने सदस्यों के लिए सोचते और उनकी समस्याओं को अपनी समस्या मानकर निबटाते।

श्रीमती तानिगुचि उसी कंपनी में एक कम आयु की श्रमिक थीं जिसमें मैं भी काम करती थी, और उन्हीं ने मुझे रेयुकाई से परिचित कराया। यह कुछ छह वर्ष पहले की बात है और मैं और मेरे पति दोनों ही सदस्य बने। ''पूर्वज स्मरण अत्यंत महत्वपूर्ण है,'' मेरे पति ने कहा था, पर उन्होंने कभी भी सूत्र जाप नहीं किया और न ही रेयुकाई की गतिविधियों को चलाने के बारे में कभी सोचा। मैं उनके इस गैर ज़िम्मेदाराना बर्ताव पर कुढ़ती रहती और स्वयं ही सूत्रजाप करती और बैठकों में उपस्थित होती।

बैठकों में मैंने देखा कि कैसे सभी अपने सदस्यों के लिए सोचते और उनकी समस्याओं को अपनी समस्या मानकर निबटाते। उनके जैसा बनने की आशा में मैं अपने मित्रों व जान-पहचान वालों से मिलने लगी और उन्हें रेयुकाई के बारे में बताती और 'मिचिबिकी' करती। परंतु मुझे कोई भी सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं मिली, और श्रीमती तानिगुचि ने कहा, ''यही तुम्हारा प्रतिबिंब है।'' उन्हें ऐसा कहते हुए सुनकर मैंने जाना कि मैंने जिन लोगों से बात की वे सभी मुझ जैसी ही स्वतंत्र महिलाएं थीं।

मेरे सदस्य बनने के लगभग एक वर्ष बाद की बात है जब मेरे पति काम के बाद घर आए और कहा, ''मैंने कर लिया।'' उन्होंने सफलतापूर्वक मिचिबिकी कर लिया था और वह मेरे लिए एक आश्चर्यजनक बात भी थी और झटका भी। मैंने सोचा, ''मैं तो अभी भी नहीं कर सकती, तो उन्होंने कैसे कर लिया!'' मैंने बाद में श्रीमती तानिगुचि से बात की और उन्होंने मुझसे कहा कि मेरे पति अपनी ही विधि से मिचिबिकी पर गहन कार्य कर रहे थे। उन्होंने यह भी कहा, ''केइको, तुम्हें अपने पति को और अधिक श्रेय देना सीखना चाहिए।'' मैंने उनके शब्दों को महसूस किया। मैं स्वार्थी थी और उनसे कभी उनके महत्व को नहीं जताया, और इस प्रकार हम हरेक बार बात करते हुए झगड़ा ही करते। सच कहूं तो यह मेरा दूसरा विवाह है और सच्चे मन से मैंने निश्चय किया कि मैं इस बार स्वयं में बदलाव लाऊंगी।

एक दिन श्रीमती तानिगुचि, मेरे पति और मैंने हमारे शाखा प्रमुख श्री ताकानोबु ताकाहाशि से भेंट की जिन्होंने हमें एक साथ मिचिबिकी करने की सलाह दी। हमने उनकी सलाह पर तुरंत कदम उठाए और मैंने स्वयं को सफलतापूर्वक मिचिबिकी करते हुए पाया, और ऐसा मैं कभी स्वयं ही नहीं कर पाती थी। मेरे पति सम्मान करने वाले व्यक्ति हैं और हरेक को ध्यानपूर्वक सुनते हैं पर बोल भी देते हैं जब उन्हें ऐसा लगे। दूसरी ओर, मैं जितना चाहूं उतना बोलती थी और न ही दूसरों की भावनाओं के बारे में सोचती, न ही उनकी स्थिति पर विचार करती। इस प्रकार के बर्ताव के साथ कौन मिचिबिकी कर सकता है?

> मेरी 'मिचिबिकी जनक', श्रीमती तानिगुचि ने एक बार कहा था, ''तुम स्वयं को समझ सकती हो यदि तुम 'मिचिबिकी'' करो.

चूंकि हमने एक साथ मिचिबिकी करना शुरु किया, इसलिए मेरे पति और मेरे बीच कभी भी झगड़ा नहीं हुआ। जब कभी सदस्य हमसे भेंट करने आते हैं और हमारे बीच कोई मतभेद हो तो हम अपनी बात वहीं रोककर उनका स्वागत करते हैं। उनके जाने के बाद हमारे मस्तिष्क से हमारे झगड़े समाप्त हो जाते हैं चूंकि हमें सदस्यों की समस्याओं पर विचार-विमर्श करने के लिए उनपर ध्यान देना पड़ता।

हम हमारी कमियों पर एक दूसरे की सहायता करना और एक दूसरे को समर्थन देना चाहेंगे और उसी समय सदस्यों को शिक्षाओं को प्रयोग में लाने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

– कृतेः केइको ओहि, 'आयुः 33'
ताकाहाशि शाखा, जापान

हमने एक साथ कर दिखाया

पांच बेटों और दो बेटियों के परिवार में मैं जन्म के लिहाज़ से सबसे छोटी थी। मेरे माता-पिता जेजु उपनगर में किसान के रूप में काम करते थे। वे धनी नहीं थे, पर एक दूसरे से बहुत प्रेम करते थे और उनकी आपस में खूब बनती। मेरे बड़े भाई-बहन मुझसे स्नेह रखते थे अतः बचपन से बढ़ते हुए मेरा जीवन सुखमय था। पच्चीस वर्ष की आयु में मेरे मित्र ने अपने एक मित्र से मेरा परिचय कराया। वह व्यक्ति हमारी पहली भेंट के चार माह बाद मेरा पति बना।

मेरे पति एक किसान के पहले बेटे थे। हालांकि वे अपने माता-पिता की भांति किसान नहीं बने पर वे जाल प्रयोग करके मछली पकड़ते थे और अपना ही एक छोटा सा व्यवसाय चलाते थे। हमारा विवाह हो जाने के बाद मैंने उन्हें भरपूर सहायता दी कि वे सफल हों तथा हमारा जीवन शांतिपूर्ण व सुखमय हो।

परंतु मेरे पति का व्यवसाय उनकी इच्छानुसार दिशा ग्रहण नहीं कर पाया। अंत में हमने व्यवसाय को समाप्त किया और नगर से ग्रामीण वातावरण में कृषि करने के लिए चले गए - जिसके कि हम आदि नहीं थे। उन्होंने धूम्रपान करना शुरु कर दिया जो कि उन्होंने कभी भी पहले नहीं किया था, ऐसा लगा कि व्यवसाय में मिली असफलता के आभास ने ही उन्हें ऐसा करने पर मजबूर किया है। उन्होंने शराब भी पीनी शुरु कर दी। कभी-कभी वे देर रात घर आते और चीखने-चिल्लाने लगते। चूंकि हम किराए के घर में रहते थे इसलिए मैं परेशान होती थी कि कहीं पड़ौसी न जाग जाएं। इससे मुझे अशांति महसूस होती। और तो और, हमारी चार बेटियां थीं और कोई बेटा नहीं। जब हमारा विवाह हुआ तो मुझे एक बाध्यकर सोच ने घेरा कि हमें अपने परिवार के नाम को आगे बढ़ाने के लिए एक बेटे की आवश्यकता थी। मैं इस दबाव से घिर गई थी और कभी-कभी ऐसा महसूस करती कि मैं एक बेटे को जन्म न दे पाने के कारण कोई अपराधी थी।

इस समय के दौरान हम रेयुकाई से परिचित हुए। पड़ौस में रहने वाली श्रीमती कोह मोंगे मेरी स्थिति जानती थी और उन्होंने मुझे रेयुकाई की एक बैठक में आमंत्रित किया। वहां उपस्थित कई लोगों का रेयुकाई के बारे में वही विचार था जो मेरे भीतर था। उन्होंने मुझसे कहा कि रेयुकाई बुद्ध की शिक्षाओं पर आधारित है; पर वहां मैंने कोई भी भिक्षु नहीं देखे, और परिवार वेदी उससे भिन्न थी जैसा कि मैं सोचकर आई थी। अर्धशंका में होते हुए भी मुझे श्रीमती मोंगे से मार्गदर्शन मिला - जो मेरी 'मिचिबिकी' जनक बनीं। मैंने अपने घर में 'सोकाइम्यो' लगवाया और एक 'काकोचो' भी (मृत नामों की पंजिका)। मैं और मेरे पति दोनों ही अपने पूर्वजों के लिए 'कूयो' करने लगे।

> अपने भाई के 49वें दिन की स्मृति सेवा के बाद मैंने स्वयं पर चिंतन किया और मेरी अपनी जीवनशैली पर पुनर्विचार किया.

चूंकि हम एक छोटे से किराए के घर में रहते थे, हमने 'सोकाइम्यो' और 'काकोचो' को एक दराज़ में रखा। हम उन्हें तब निकालते जब कभी हम सूत्रजाप या अन्य कोई रेयुकाई कार्य करना होता। आठ वर्ष बाद जब हमने अपना ही एक घर लिया। हमने बहुत ही अच्छी परिवार वेदी बनवाई और प्रत्येक प्रातः व सान्ध्य को अपने घर के आराम में 'सूत्र' का जाप करते।

इस बात के होते दो वर्ष के बाद हमारे पहले पुत्र ने जन्म लिया। वह बहुत ही मूल्यवान शिशु था। श्रीमती मोंगे और हमारे शिबुचो भी प्रसन्न थे कि हमें एक पुत्र प्राप्त हुआ था। उन्होंने हमारे पुत्र को अपने पुत्र की भांति ही समझा। मुझे ऐसा आभास हुआ कि आध्यात्मिक संसार में मेरे पूर्वज मेरी प्रशंसा करते हुए मुझसे कह रहे थे, ''एक अच्छा शिशु प्रदान करने के लिए धन्यवाद!''

पिछले वर्ष सितंबर में मेरे बड़े भाई की मृत्यु हो गई थी। मैं उसके परिवार के सदस्यों के बारे में सोचती, और हमने यह निर्णय लिया कि हम उसके लिए 49वें दिन की स्मृति सेवा करेंगे। उस दिन कई रेयुकाई सदस्य मेरे घर पर आए और मेरे भाई की आत्मा के लिए 'सूत्र' का जाप किया। मुझे विश्वास है कि मेरे भाई को यह सुनकर प्रसन्नता हुई होगी। सदस्यों द्वारा 'सूत्र' का जाप करने के लिए मेरा हृदय उनके प्रति भावविभूत और प्रशंसक हुआ।

मेरे भाई के 49वें दिन की स्मृति सेवा के बाद मैंने स्वयं पर चिंतन किया और मेरी अपनी जीवनशैली पर पुनर्विचार किया। उस समय तक मैं अपनी असंतुष्टि के बारे में निराशावादी थी और मुझमें प्रशंसा की भावना नहीं थी और न ही मेरे चारों ओर मौजूद किसी के लिए भी विचार था। मैंने अपने माता-पिता और अपने पूर्वजों के प्रति कोई भी सोच-विचार किए बिना अपना जीवन व्यतीत किया था, और जीवन के आनंद को भी नहीं जाना था। मेरे पति धूम्रपान और शराब पीने की अपनी आदत छोड़ सके थे - आदतें जिन्हें वे पहले पसंद करते थे।

रेयुकाई की शिक्षाओं की अद्भुतता के माध्यम से मैं यह सोचती हूं कि किसी भी स्थिति में होते हुए आप अपने जीवन के प्रति सकारात्मक रवैया रख सकते हैं। जब मैंने श्रीमती मोंगे से कई चीज़ों के बारे में शिकायत की तो उन्होंने मुझे अपने ही साहस के माध्यम से इन कठिनाइयों को पार करने के लिए प्रोत्साहित किया।

भविष्य में मेरे जीवन में चाहे कुछ भी हो, मैं अपने जीवन में रेयुकाई की शिक्षाओं को लागू करूंगी और इस प्रकार एक शांतिपूर्ण परिवार बनाऊंगी। मैं श्रीमती मोंगे और अपने शिबुचो द्वारा दिए गए अनुग्रह और मार्गदर्शन को कभी भी नहीं भूल पाऊंगी। मैं औरों को भी रेयुकाई से परिचित कराऊंगी और औरों को उनके अपने जीवन के प्रति सकारात्मक रवैया दिखाते हुए उनपर सकारात्मक प्रभाव बनाने का प्रयत्न करूंगी।

- कृतेः जुन-होज़ाशु किम योंग जा '48 वर्ष'
जेजु ज़िला, कोरिया

दिल्ली में चित्रकला व क्विज़ प्रतियोगिता आयोजित

आध्यात्मिक सहचर्य संस्था, रेयुकाई भारत के दिल्ली कार्यालय में 19 अगस्त 2007 को काफ़ी अधिक गतिविधि और चहल-पहल थी। इस दिन दहिया शिबु समूह की चौथी शाखा की दिल्ली इकाई ने 'चित्रकला' और 'क्विज़' प्रतियोगिता का आयोजन किया। सभी आयु वर्ग के लगभग 20 बच्चों ने चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लिया जबकि लगभग 30 सदस्यों ने क्विज़ प्रतियोगिता में भाग लिया।

चित्रकला प्रतियोगिता के लिए दो समूह बनाए गए, एक जिनमें 10 वर्ष तक के बच्चे थे जिन्हें 'बाज़ार' या 'चिल्ड्रन पार्क' विषय दिया गया और दूसरा 10 वर्ष से अधिक का समूह जिन्हें 'ग्रामीण और नगरीय जीवन में पर्यावरणीय परिवर्तन।' आध्यात्मिक सहचर्य संस्था द्वारा सभी बच्चों को इस प्रयोजन के लिए आवश्यक वस्तुएं दी गईं जैसे शीट, क्रेयान और आयल पेस्टल, कलर बाक्स, पेन्सिल इत्यादि।

दोनों ही समूहों में उपयोगी वस्तुओं के रूप में प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार वितरित किए गए। बच्चों ने अपने पुरस्कार शिबुचो श्री सुशील दहिया से प्राप्त किए।

'क्विज़ प्रतियोगिता' एक युवा सदस्या कु. श्रुति शर्मा द्वारा आयोजित किए गए। पांच-पांच सदस्यों के पांच समूह बनाए गए तथा प्रतियोगिता पर निर्णय लेने के लिए दो क्विज़ मास्टर और एक स्कोरर नियुक्त किए गए। पांच समूहों में से दो समूहों को प्रथम व द्वितीय घोषित किया गया तथा दोनो समूहों के सभी दस सदस्यों को पुरस्कार दिए गए। प्रथम समूह में श्री अमित, श्री हरीश, श्री प्रकाश, श्री विकास और श्री कुलवन्त थे जबकि दूसरे समूह में श्री दीपक जोशी, श्री मनीश, श्री आशीष, श्री सुधीर और कु. हनी लारेंस थे।

प्रतियोगिता के अंत में विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। शिबुचो श्री सुशील दहिया ने इस अवसर पर बोलते हुए प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया और आशीर्वाद दिया। भाग लेने वाले बच्चों और सदस्यों के लिए जलपान की व्यवस्था भी की गई।

- रिपोर्टः सुधीर शर्मा, नई दिल्ली

रेयूकाई जापान के सदस्य सासाराम परिवार दिवस उत्सव में शामिल हुये

आध्यात्मिक सहचर्य संस्था, रेयुकाई ने स्थानीय कुशवाहा सभा भवन में गत रविवार को परिवार दिवस आयोजित किया और पारिवारिक विरासत की संरक्षा के लिए आह्वान किया।

संस्था के उप निदेशक याशुनोरि इमुरा, मासारु तोमिता, शुजि सानो और यूको सानो जो सभी जापान से आए हुए थे, ने इस अवसर पर बोलते हुए परिवार की संवृद्धि और समाज में पूर्वजीय पावन मूल्यों पर बल दिया। उन्होंने कहा कि समाज, राष्ट्र और विश्व का भविष्य, सभी परिवार से परस्पर जुड़े हुए हैं। हमारा जीवन स्रोत हमारे पूर्वजों के समय से ही अविरल धारा की भांति बहता चला आ रहा है।

ज़िला परिषद प्रमुख शीला सिंह ने कहा कि जहां परिवार में सुख-शांति पाई जा सकती है तो वहीं इस धरती पर स्वर्ग है। जहां कहीं भी परिवार में अशांतता और विभाजन, घृणा और विरोध हों वह परिवार नहीं बल्कि नर्क तुल्य है। ज़िला कालेज के प्राध्यापक प्रोफेसर डी. के. मुखर्जी ने भी परिवार के विषय पर कहा कि एक शांतिपूर्ण समाज केवल सुखमय परिवारों द्वारा बनाया जा सकता है। हम इस विरासत को अपने भावी वंशजों को गर्व के साथ दे सकते हैं।

लोगों ने एक सुखी परिवार के सच्चे अर्थ को विश्वभर में फैलाने के लिए कहा। 'सृजन' संस्था की रानी नन्दनी, मधुलिका और आप्ति सहित कई कलाकारों ने इस अवसर पर एक नृत्यनाटिका भी प्रस्तुत की।

- रिपोर्टः आ. स. सं., नई दिल्ली

रेयूकाई समाचार

सुजानगढ़ में 'चित्रकला' एवं 'निबन्ध-लेखन' प्रतियोगिताएं

आध्यात्मिक सहचर्य संस्था 'रेयूकाई' के तत्वावधान में सुजानगढ़ शाखा के सौजन्य से एक 'चित्रकला प्रतियोगिता' एवं 'निबन्ध-लेखन प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 100 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। 'निबन्ध-लेखन' प्रतियोगिता में प्रथम स्थान कु. दुर्गा राठौड़, द्वितीय स्थान मदन गोपाल प्रजापत एवं तृतीय स्थान रजत ने प्राप्त किया। कनिष्ठ वर्ग के छात्र-छात्राओं के लिये आयोजित 'चित्रकला' प्रतियोगिता में प्रथम स्थान कु. अनु सिब्बल, द्वितीय स्थान कु. मनोज बावरी एवं तृतीय स्थान कु. कैलाश नायक ने प्राप्त किया। सभी प्रतिभागीयों एवं विजेताओं को संस्था द्वारा पुरुस्कार वितरित किये गये।

इस अवसर पर उपस्थित संस्था के सदस्यों ने गैर-सदस्यों एवं अभिभावकों को संस्था के बारे में अपने व्यक्तिगत अनुभव बताये एवं रेयूकाई अभ्यास की जानकारी दी। प्रतियोगिता पुरुस्कार वितरण समारोह में नन्हें-मुन्ने बाल कलाकारों ने अपने द्वारा नृत्य, गायन एवं नाट्य कला की प्रस्तुति देकर समारोह को बेहद सुरुचिपूर्ण बना दिया।

समारोह का शुभारम्भ श्री सुरजाराम डाबरिया, बी.ई.ई.ओ., श्री सुरजाराम बीरड़ा, ए.बी.ई.ई.ओ., श्री फूलचंद विजारणियां, बी.आर.सी.एफ़, श्री दाऊलाल त्रिवेदी एवं डा. हरीश चन्द्र शर्मा ने दीप प्रज्जवलित करके किया। अपने उद्गार में श्री फूलचंद विजारणियां ने रेयूकाई संस्था के द्वारा किये जा रहे सामाजिक कार्यो एवं प्रतियोगिताओं को बच्चों के लिए आवश्यक बताया कि जिससे उनमें स्वस्थ विचारों का समावेश होता है।

समारोह की अध्यक्षता श्री सुरजाराम डाबरिया ने की एवं उन्होंने अपने विचारों को अत्यंत ही रोचक शब्दों में प्रस्तुत किया। शिक्षा को जीवन में महत्वपूर्ण बताते हुए उन्होंने कहा, ''सुजानगढ़ एवं आसपास के क्षेत्र में रेयूकाई संस्था के द्वारा जो प्रतियोगिता रूपी कार्यक्रम करवाये जाते हैं उससे उन सभी छात्रों में अपने परिवार, समाज एवं पूर्वजों के प्रति आदर एवं सम्मान की भावना का उदय होता है, और यही भावना मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास करती है, जो कि परिवार के अच्छे संस्कारों की आधारशिला होती है।'' उन्होंने संस्था से इस तरह के अन्य आयोजन अनवरत आगे भी करते रहने का आह्वान किया।

संस्था सदस्य श्री श्यामसिंह शेखावत, श्री बाबूलाल स्वामी, श्री हरि भार्गव, श्री श्रवण कुमार पारीक, श्री प्रियदर्शी प्रजापत, श्री आशाराम घिंटाला, श्री आत्माराम चेतीवाल, श्री रामनिवास बोकोलिया एवं दूरस्थ क्षेत्रों से आये सभी सदस्यों ने अपने विचारों का उल्लेख किया। संस्था सदस्य श्री जगदीश प्रसाद सैन, सी.आर. सी.एफ़., एवं श्री रणजीत सिंह भीचर ने अपने व्यक्तिगत अनुभव बताये एवं स्वयं में सुधार के लिये रेयूकाई संस्था को एक ''माता'' की संज्ञा दी, जो हमें निरंतर अच्छाईयों पर चलने की प्रेरणा देती है। साथ ही यह सुझाव भी दिया कि क्यूंकि यह एक सेवाभावी संस्था जिसके सभी सदस्य हर समय सेवाभाव को तत्पर रहते हैं, अतः सभी सदस्य मिलकर एक ''रक्तदान शिविर'' का आयोजन करें जोकि किसी ज़रूरतमंद व्यक्ति का जीवन बचा सके। इस सुझाव का सभी सदस्यों ने स्वागत किया एवं सदस्य श्री भंवरलाल प्रजापत ने सर्वप्रथम अपने द्वारा रक्तदान करने की इच्छा भी जताई।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए सदस्य श्री रामेश्वरलाल खीचड़ ने अपने विचारों के माध्यम से स्वयं में सुधार के लिये रेयूकाई को महत्वपूर्ण बताया और कहा कि निरंतर अभ्यास, चिंतन-मनन, आदि द्वारा मन में सकारात्मक भावनाओं का विकास होता है। अंत में सभी प्रकार से सफलतापूर्वक मनाये गये इस प्रतियोगिता समारोह के समापन पर संस्था के श्री विकास प्रजापति ने अपने अभिभाषण में कहा कि अपने व्यवहारिक जीवन में पूर्वज-स्मरण को अपनाने से परिवार में खुशहाली आती है। हम भले ही किसी और को याद करें या ना करें पर अपने पूर्वजों को याद करके हम स्वयं का जीवन सुख-समृद्धिपूर्ण बना सकते हैं, जो कि शांतिपूर्ण और आनन्दमय जीवन जीने का सरलतम मार्ग है।

इसी के साथ सभी सदस्यों ने हमारे शिबुचो श्री सुशील दहिया की बहिन श्रीमति सुनीता गुलिया के असामयिक निधन पर शोक प्रकट करते हुये मौन रखकर उनकी आत्मिक शांति के लिये प्रार्थना की एवं उनके परिवार की सुख-शांति की कामना भी की।

– रिपोर्टः विकास प्रजापति, सुजानगढ़

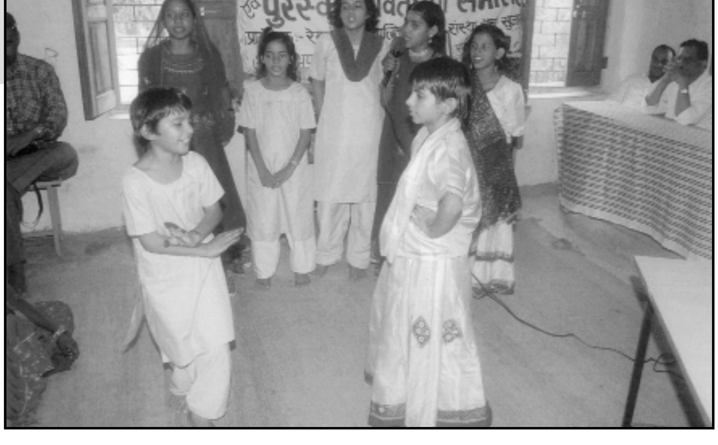

इलाहाबाद शाखा ने किया रक्तदान शिविर का आयोजन

इलाहाबाद में गत 30 जून 2007 को आध्यात्मिक सहचर्य संस्था की स्थानीय शाखा द्वारा बेली रोड, इलाहाबाद स्थित ''जीवन रक्षा ब्लड बैंक'' के सहयोग से एक रक्तदान शिविर आयोजित किया गया जिसमें संस्था के सभी स्थानीय सदस्यों ने भारी संख्या में हिस्सा लिया तथा बढ़ चढ़ कर रक्तदान किया।

इस शिविर के आयोजन में जीवन रक्षा ब्लड बैंक के प्रबंधक एवं संचालक श्री अजय तिवारी, डा. सुनील अवस्थी और आध्यात्मिक सहचर्य संस्था के सदस्य श्री अतुल रावत, संजय मिश्रा, श्यामजी शुक्ला, सुजीत कुशवाहा, अशोक सिंह आदि ने बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

श्री अजय तिवारी ने रक्तदाताओं को एक-एक प्रमाणपत्र भी दिया जिससे बतौर रक्तदाता वे ज़रूरत पड़ने पर स्वयं अपने एवं अपने परिजनों हेतु कभी भी ब्लड बैंक की सेवाएं प्राप्त कर सकें। जीवन रक्षा ब्लड बैंक यूं भी गरीबों और ज़रूरतमंद लोगों की सहायता के लिये हमेशा तत्पर रहता है।

तिवारी जी ने रक्तदाताओं को रक्तदान करने के लिए धन्यवाद देते हुये इस सेवा को करते रहने के लिए प्रेरित किया। आध्यात्मिक सहचर्य संस्था के सदस्य श्री अतुल रावत जी ने अपने सभी सदस्यों को रक्तदान करने और इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए धन्यवाद देकर उनका उत्साहवर्द्धन किया एवं भविष्य में भी इस तरह के जन-हितकारी कार्य अपनी संस्था के माध्यम से करते रहने का वचन दिया।

कार्यक्रम के समापन पर एकत्रित रक्त को जीवन रक्षा ब्लड बैंक में पहुंचा कर जमा करा दिया गया। इस प्रक्रिया के दौरान ब्लड बैंक के प्रबंधकों के साथ संस्था के सदस्य भी मौजूद रहे।

– रिपोर्टः अजय तिवारी, इलाहाबाद

समस्तीपुर में 'परिवार दिवस'

रेयूकाई के तत्वाधान में 11 जून 2007 को बिथान हाई स्कूल, समस्तीपुर के प्रांगण में परिवार दिवस आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में चतुर्थ शाखा, बोकारो के शिबुचो श्री वी. एन. मेहता उपस्थित हुए। विशिष्ट अतिथि के तौर पर पंचायत प्रमुख बिथान, पुसहो, सिरसिया तथा प्रखण्ड के प्रमुख पदाधिकारी श्री राम सेवक महतो, बी.ओ., उपस्थित हुए। समारोह का शुभारम्भ श्री राम सेवक महतो ने दीप प्रज्जवलित कर के किया। इस अवसर पर बच्चों ने राष्ट्रीय गान और स्वागत गीत गाकर अतिथियों का स्वागत किया। क्षेत्र की महिलाओं एवं किशोर-किशोरियों के लिये कुर्सी दौड़, सूई-धागा दौड़, भाषण प्रतियोगिता, आदि का तथा कनिष्ठ वर्ग के बच्चों के लिये चित्र प्रतियोगिता, टौफ़ी दौड़ जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

भाषण प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागी श्री शिव शंकर प्रसाद ने स्वयं को पूर्वजों का प्रतिरूप व विनम्रता और अच्छे सम्बंध को विकास का सही मार्ग बताया। अग्रज मेरे और मैं उनका शुभचिन्तक हूँ, उनका मैं कृतज्ञ रहूँ यही मेरा सौभाग्य होगा, कहकर अपना वक्तव्य समाप्त किया। दूसरी प्रतिभागी गुंजन कुमारी ने अपने वक्तव्य में 'नारी उत्पीड़न' को 'ममता पर कुठाराघात' की संज्ञा दे नारी को करूणा, दया व प्रेम की गंगा कह नारी की विवशता को कोमल हृदय का प्रतीक बताकर श्रद्धा की अपेक्षा की।

मुख्य अतिथि श्री वी. एन. मेहता ने रेयूकाई के मूल उद्येश्यों को विस्तार से प्रतिबिंबित किया। सूत्रपाठ परिवार के लिये कितना ज़रूरी है इसका उदाहरण 10 पीढ़ी के पूर्वजों की गणना कर अपना स्थान 1024वां बताया। श्री राम प्रवेश महतो ने अपने अनुभव में रेयूकाई की प्राथमिक सदस्यता पर ज़ोर दिया व अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का खुलासा किया। सभा को सम्बोधित करने वाले अन्य थे राम दुलार महतो, अनिरूद्ध महतो, गुणानन्द व सिकंदर महतो। उपस्थित 250 सदस्यों ने कार्यक्रम को सफल बनाने में भरपूर योगदान दिया। समारोह का समापन राम दुलार महतो ने धन्यवाद ज्ञापन देकर किया।

– रिपोर्टः वी. एन. मेहता, बोकारो

कमल सूत्र से एक दृष्टांत

जादूई नगर

किसी समय में एक खतरनाक, लंबी व बुरी सड़क थी। वह सड़क इतनी भयानक थी कि आसपास के पूरे क्षेत्र में केवल एक ही व्यक्ति रहता था। अब कई लोग किन्हीं बहुमूल्य वस्तुओं वाले स्थान पर जाने के लिए उस सड़क से होकर गुज़रना चाहते थे। उन्हें एक व्यक्ति अपने नेतृत्व में अपने साथ ले गया जो चतुर व बुद्धिमान था और वह उस खतरनाक सड़क की स्थिति से भली-भांति परिचित था।

आधी यात्रा में लोग थक गए और उन सबने अपने नेतृत्वकर्ता से कहा, ''हम थक गए हैं। हम इस सड़क के खतरों से भी भयभीत हैं। हम एक कदम भी आगे नहीं जा सकते। हमारा गंतव्य अभी भी दूर है। हम वापस जाना चाहते हैं।''

कई उपाय जानने वाले नेतृत्वकर्ता ने सोचा, ''कितना बुरा लग रहा है! ये लोग बहुमूल्य वस्तुएं पाए बिना ही वापस जाना चाहते हैं।'' यह सोचने के बाद उसने चमत्कार से कुछ दूरी पर तुरंत ही एक नगर निर्मित किया। उसने उन लोगों से कहा, ''वापस मत जाओ! तुम सब उस विशाल नगर में रह सकते हो और जो जी में आए कर सकते हो। उस नगर में प्रवेश करने के बाद तुम्हें शांति प्राप्त होगी। यदि तुम बाद में आगे बढ़ो और बहुमूल्य वस्तुओं वाले स्थान पर पहुंचो तो तुम सब अपने घर वापस जा सकते हो।''

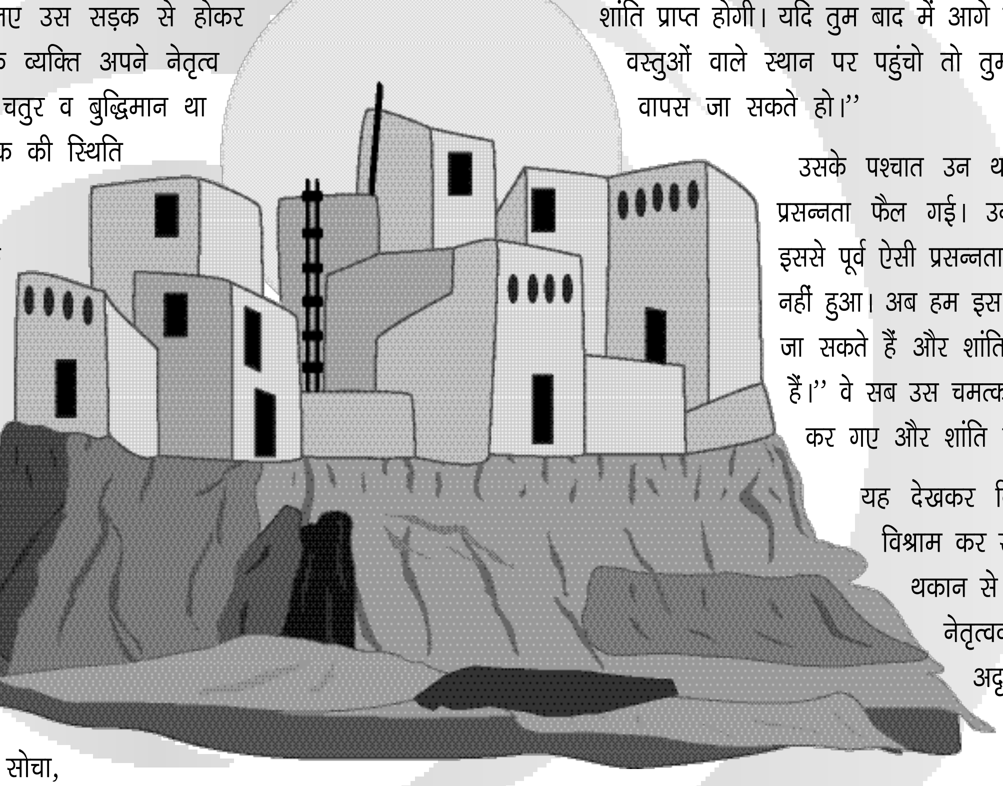

उसके पश्चात उन थके हुए लोगों में प्रसन्नता फैल गई। उन्होंने कहा, ''हमें इससे पूर्व ऐसी प्रसन्नता का आभास कभी नहीं हुआ। अब हम इस बुरी सड़क से दूर जा सकते हैं और शांति प्राप्त कर सकते हैं।'' वे सब उस चमत्कारी नगर में प्रवेश कर गए और शांति की अनुभूति की।

यह देखकर कि वे सब लोग विश्राम कर रहे थे और अपनी थकान से मुक्त हो चुके थे, नेतृत्वकर्ता ने नगर को अदृश्य कर दिया और उन सब से कहा, ''अब बहुमूल्य वस्तुओं वाला स्थान निकट है। मैंने यह नगर चमत्कार द्वारा बनाया था ताकि तुम सब विश्राम कर सको।''

व्याख्या:

बुद्ध उन बहुमूल्य वस्तुओं की खोज में एक नेता की भांति है। वह उस बुरी सड़क के बारे में जानते हैं जो कि जन्म, मृत्यु व भ्रांति की तरह है। जो कोई भी उस चमत्कारी नगर से संतुष्ट हैं वे शोमोन व एगान्कु के लोग हैं। हालांकि वे सोचते हैं कि वे ज्ञानोदय प्राप्त कर चुके हैं, किंतु वे अभी तक वहां तक नहीं पहुंच पाये हैं। यह उन सब की उस चमत्कारी नगर से प्राप्त संतुष्टि की भांति है। वास्तविक ज्ञानोदय अभी बहुत दूर है और उसे केवल बोधिसत्व के मार्ग का अभ्यास करके ही प्राप्त किया जा सकता है। यह कथा हमें यह भी शिक्षा देती है कि हमें कभी-कभी उपायों की आवश्यकता होती है। निचिरेन सम्प्रदाय में कीटो अथवा विशेष आशीष अथवा प्रार्थना एक उपाय है। भौतिक संतुष्टि के लिए प्रार्थना कुछ लोगों के लिए आवश्यक है परंतु अंतिम लक्ष्य है उस बहुमूल्य वस्तु वाले स्थान पर पहुंचना जो कि बौद्धत्व की प्राप्ति है।

{इस दृष्टांत का वर्णन कमल सूत्र के अध्याय 7 में किया गया है}

रेयूकाई अभ्यास

सोकाइम्यो

सोकाइम्यो शब्द को दो मुख्य भागों में बाँटा जा सकता है – 'सो' और 'काइम्यो'। पहले भाग का अर्थ है – सब या सबको गले लगाना। दूसरा शब्द उस दिवंगत व्यक्ति को इस अभिलाषा से दिया गया नाम है कि वह ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित होगा।

रेयूकाई का सोकाइम्यो पति व पत्नी के चारों और घूमता है – जो कि एक परिवार का केन्द्र बिन्दु है। कोई भी यह कह सकता है कि सोकाइम्यो पति व पत्नी में समानता पर आधारित है, यह एक अत्यंत आधुनिक पहुँच है। इसका अर्थ हुआ कि कोई आध्यात्मिक जगत में पति व पत्नी किसी के भी परिचित या अपरिचित सभी पूर्वजों के आत्म–ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रार्थना करता है। सोकाइम्यो हमारे उन सभी पूर्वजों का चिन्ह है जो हमसे पहले जा चुके हैं। यह इस आशा को बल देता है कि ये सभी लोग आध्यात्मिक जगत में आत्म–ज्ञान व प्रसन्नता के पथ पर बढ़ने के लिए प्रेरित होंगे।

सोकाइम्यो के माध्यम से हम जीवन के उस महत्वपूर्ण सम्पर्क की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं जो हमें पूर्वजों से विरासत में मिला है, उन्हें उनके पूर्वजों से जिन्होंने इस अनगिनत पूर्वज पंक्ति में अपना–अपना स्थान बना लिया है। सोकाइम्यो के माध्यम से आप जीवन के इस मूलभूत रहस्य की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यहाँ सोकाइम्यो का एक सार्थक रूप प्रस्तुत किया जाता है।

अब हम चीनी भाषा के शब्दों का विवेचन करेंगे जिनसे सोकाइम्यो बनता है। ऊपर से प्रारम्भ करें तो 'तेई' का अर्थ है सत्य, 'सेई' का अर्थ है जन्म और जीवन, 'इन' का मकान, 'हो' का धर्म, 'दो' का मार्ग, 'जि' का दया या सहानुभूति, 'जेन' का अच्छाई, 'से' का प्रदान करना या उपकार करना, 'सेन्जो' का पूर्वज, 'तोकु' का धार्मिक पुण्य, 'कि' का सामने प्रकट होना, 'बोढाईशिन' का बौद्धिक ज्ञान के लिए प्रेरणा। इन सभी शब्दों को एक वाक्य के रूप में संजोने पर, इसका आश्चर्यजनक अर्थ इस प्रकार होता है :

''हे परिवार और परिवार के पूर्वजो! आपके धार्मिक पुण्य आपके बौद्धिक ज्ञान की प्रेरणा का कारण बनें, ताकि आप एक सच्चे मानव के आंतरिक अस्तित्व को रखने और बोधिसत्व पद्धति के अनुसार धर्म पथ का अनुसरण करने में समर्थ हों।''

सोकाइम्यो समर्पित कराने वाले वह व्यक्ति सीमित हैं, जिन्होंने रेयूकाई के विशेष अभ्यासों को समझ लिया है, और ऐसा करने की योग्यता प्राप्त की है। ऐसी बात नहीं कि हर कोई यह काम कर सकता है, यदि आपके ओया को यह योग्यता प्राप्त है तो आपका ओया इसे समर्पित करा सकता है, यदि आपके ओया को यह योग्यता प्राप्त नहीं है तो उसी शाखा का कोई भी योग्यता–प्राप्त व्यक्ति यह कार्य कर सकता है अन्ततः आपके स्थानीय केन्द्र का कोई भी योग्यता–प्राप्त कर्मचारी भी यह कार्य कर सकता है।

वह कागज़ जिस पर सोकाइम्यो समर्पित किया जाता है, विशेष प्रकार का होना चाहिए जो आपके स्थानीय रेयूकाई केन्द्र से प्राप्त हो सकता है। आप अपने सोकाइम्यो को एक सामान्य नए कागज़ पर, गत्ते के त्रिफ़लक पर, या लकड़ी के स्टैण्ड पर चिपका सकते हैं। गत्ते का त्रिफ़लक या लकड़ी का स्टैण्ड आप स्थानीय केन्द्र से खरीद सकते हैं।

सोकाइम्यो को आध्यात्मिक द्वार भी कहा जा सकता है, जिस के द्वारा पूर्वज–स्मरण के समय हम अपना मस्तिष्क अपने पूर्वजों पर केन्द्रित करते हैं। अतः आपको अपना सोकाइम्यो ऐसे स्थान पर रखना चाहिए, जिससे आपके पूर्वज, यदि जीवित हों तो व्याकुल न हों। यदि आपके घर में आपके परिवार का कोई पूजा स्थल हो और यदि उस में सोकाइम्यो रखा जा सकता है तो उसे वहाँ रख दीजिए। अधिक जानकारी के लिए आप ओया से पूछिए जिसने आपको रेयूकाई से परिचित कराया था या फिर किसी वरिष्ठ सदस्य से सलाह लीजिए।

किसी भी स्थिति में, पूर्वज कोई ईश्वर विशेष नहीं है, बल्कि वह तो वह स्वरूप है जिससे आपकी जीवन पद्धति बनी है। समय के अज्ञात केन्द्र बिन्दु से नीचे की ओर प्रवाहित जीवनधारा के दृष्टिकोण से आप यह समझ सकते हैं कि आप उसी धारा के जीवित अंग है। अतः सोकाइम्यो के सामने उन लोगों के लिए चिन्हित किया गया है, सूत्र–पाठ करना हमारे संकल्प की, हमारी वह अभिव्यक्ति समझी जा सकती है जिससे हम भी ज्ञान के उसी मार्ग पर बढ़ सकें।

तेई	諦	सत्य
सेई	生	जन्म
इन	院	घर
हो	法	धर्म
दो	道	मार्ग
जी	慈	दया या सहानुभूति
ज़ेन	善	अच्छाई
से	施	प्रदान करना या उपकार करना
सेन	先	पूर्वज
ज़ो	祖	
पिता / पति पक्ष का उपनाम	○○○ ○○○	माता / पत्नी पक्ष का उपनाम
के	家家	परिवार
तोकु	徳	धार्मिक पुण्य
कि	起	प्रकट होना
बो	菩	बौद्धिक ज्ञान
दाई	提	
शिन	心	दिल, दिमाग, आत्मा

एक सोकाइम्यो

ओदाईमोकु

ओदाईमोकु रेयूकाई सदस्यों के लिए ऐसा शब्द है जो 'नमो म्यो होरेंगे क्यो' मन्त्र को दिया गया है। संक्षिप्त में इसका अभिप्राय हैः मैं कमल–सूत्र की शिक्षाओं को अपनी ज़िन्दगी का हिस्सा बनाने का प्रयत्न करूंगा।

ओदाईमोकु दो शब्दों का मिलन है 'ओ' और 'दाईमोकु'। 'ओ' शब्द सम्मान देने के लिए प्रयोग किया जाता है तथा 'दाईमोकु' अर्थात कमल–सूत्र का मुख्य अंश। दाईमोकु का उच्चारण पूर्वज–स्मरण व किसी सभा के आरंभ तथा समाप्ति पर किया जाता है। इसका उच्चारण तेज़ बोलकर या मन में भी किया जा सकता है। इसका उच्चारण विपत्ति के समय में या मन की शांति के लिए भी किया जाता है।

प्रमुख बात यह है कि हम 'नमो म्यो होरेंगे क्यो' मन्त्र का प्रयोग क्यों करते हैं। इसका मुख्य कारण है रेयूकाई के संस्थापक श्री काकूतारो कूबो का कमल–सूत्र के संपर्क में आना। उन्होंने एहसास किया कि कमल–सूत्र बौद्धिसत्व अभ्यास की शिक्षा ही नहीं अपितु अच्छे जीवन की कल्पना पूरे समाज के साथ मिलकर करने के प्रयत्नों को भी सम्भव करता है। इन प्रयत्नों के फलस्वरूप ही रेयूकाई की स्थापना हुई।

दूसरा कारण था कमल–सूत्र का जापान तक विस्तार। कमल–सूत्र का जन्म भारत में हुआ और अनेकों लोगों के प्रयत्नों से सूत्र जापान तक पहुंचा। निचिरेन शोनिन 1228 से 1282 ने अभ्यास से कमल–सूत्र की शिक्षाओं को लोकप्रिय किया। उस समय काफी संख्या में लोग अनपढ़ थे। इसलिए नमो शब्द को कमल–सूत्र के मुख्य अंश के साथ जोड़ दिया गया। निचिरेन के प्रयत्नों ने अभ्यास के लिए आसान रूप तैयार किया वह था 'नमो म्यो होरेंगे क्यो' मन्त्र का उच्चारण। अभ्यास के नए रूप कमल–सूत्र को जापान में खुले दिल से अपनाया गया।

रेयूकाई संस्थापक श्री काकूतारो कूबो भी सूत्र–पाठ के अभ्यासकर्ता थे और उन्होंने 'नमो म्यो होरेंगे क्यो' मन्त्र को अपने अभ्यास का हिस्सा बनाया जिसका अर्थ है मैं कमल–सूत्र की शिक्षा को अपने जीवन में ज़िन्दा रखने का हर सम्भव प्रयास करूंगा।

निचिरेन के समय की तरह, आज समाज में ऐसे बहुत कम लोग हैं जो पढ़ना–लिखना नहीं जानते। आज इच्छा की स्वतन्त्रता ही व्यक्ति की स्वतन्त्रता है। श्री काकूतारो कूबो तथा श्रीमति किमी कोतानी ने अपने कठिन अभ्यास के अनुभवों से बौद्धिसत्व अभ्यास को वर्तमान समाज के अनुरूप विकसित किया है। अभ्यास न केवल ओदाईमोकु का उच्चारण है अपितु नील–सूत्र का पाठ तथा मिचिबिकी करना भी है।

व्यक्तिगत अनुभव

सूत्रपाठ मेरा प्रेरणास्रोत

कृतेः शिबूचो जीत सिंह बौद्ध, अलीगढ़ ० ओया व शिबुचोः श्री पारितोष बन्धु

मैं अगस्त 1999 में, निर्वाण प्राप्त परम श्रध्देय के. पी. आर. बन्धु जी के घर अलीगढ़ में एक बौद्ध सम्मेलन हेतु मुख्य अतिथि के लिए आमन्त्रित करने के लिए गया था। तभी उन्होंने मेरे साथ मिचिबिकी करके मुझे रेयूकाई का महत्व समझाया तो मैं तुरन्त ही इसका सदस्य बन गया। मेरे ओया श्री के. पी. आर. बन्धु के सुपुत्र श्री पारितोष बन्धु जी हैं।

16 दिसम्बर 1999 को मेरे घर पर बन्धुजी ने सभा बुलायी जिसमें माननीय माईकावा जी उपस्थित हुए। तत्पश्चात बोकोरो की आई. डी. पी. व दिल्ली में प्रथम लीडरस ट्रेनिंग कैम्प में शामिल होने का भी अवसर प्राप्त हुआ। तब जाकर मुझे ज्ञात हुआ कि रेयूकाई संस्था क्या-क्या करती है। श्री बागेश्वर शाह जी से भी मुझे इस बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त हुई।

माननीय बन्धु जी के द्वारा कई बार करायी गई प्रैक्टिकल ट्रेनिंग एवं सूत्रपाठ में भी सम्मिलित होने का मुझे अवसर मिला। बार-बार सूत्रपाठ करने से मुझे दिमागी तौर पर परिवर्तन दिखायी पड़ने लगा। रेयूकाई में आने से पहले में अपने समय के महत्व को नहीं पहचान पा रहा था। अपने कार्यक्षेत्र कचहरी से आने के पश्चात चार-छः लोगों के साथ ताश खेलकर मैं अपने समय को बर्बाद करता था। समझाये जाने पर मुझे एहसास हुआ कि वास्तव में यह समय मेरा है और यह बहुत कीमती है। यदि मैं अपने कीमती समय में अधिक लाभ व ज्ञान न प्राप्त कर सकूँ तो मेरे पढ़े-लिखे होने से क्या लाभ। यह तो जानवर जैसी जिन्दगी व्यतीत करने के समान हो गया। रेयूकाई भी ख़ास तौर पर बुद्ध की शिक्षाओं का अमल व प्रैक्टिकल कराती है और उससे काफ़ी लोग लाभ उठा रहे हैं।

बुद्ध की शिक्षाओं में मैंने रेयूकाई के माध्यम से यह ज्ञान प्राप्त किया कि मानव की किसी भी समस्या का समाधान मानव स्वयँ ही कर सकता है। बुद्ध ने भी कहा है – 'अप्प दीपो भव', यानि अपने दीपक स्वयँ बनिये। बुद्ध ने 2550 वर्ष पूर्व मानव कल्याण का मार्ग बताया था और यदि मानव आज उस पर अमल करे तो सम्पूर्ण मानवजाति का कल्याण कर सकता है।

मैंने भी इसी मार्ग का अनुसरण करने का प्रयास किया है। मैं अपने से कमज़ोर व्यक्तियों के कल्याण के लिए सहयोग करता हूँ तथा जगह-जगह जाकर मिचिबिकी भी करता हूँ। गाँव-गाँव जाकर गरीब बस्तियों में जाकर अनपढ़ महिलाओं, लड़कियों व बुजुर्गों व युवाओं को बुलाकर पंचाग प्रणाम करना बताता हूँ, उससे शारीरिक व दिमागी शक्ति का विकास होता है। साथ ही बताता हूँ कि जिस प्रकार यदि हम अपनी गाय भैंस को कीमती चारा खिलाते हैं तो इसलिए उसका पूरा दूध भी निकालते हैं। इसी प्रकार जब हम अपने शरीर को भी पूरा-पूरा, अच्छा व कीमती भोजन ग्रहण कराते हैं, तब क्या हम यह सोचते हैं कि हम अपने शरीर व दिमाग का पूरा पूरा प्रयोग करते हैं या नहीं। और ऐसे में ही यह एहसास होता है कि हम अपने शरीर व दिमाग का पूरा प्रयोग नहीं करते। यहां तक कि हम अपने कीमती समय का भी पूरा प्रयोग नहीं करते। एक अच्छा मानव तो वही है जो अपने दिमाग, शरीर और समय का पूरा पूरा प्रयोग करे। रेयूकाई ने भी बुद्ध की इसी शिक्षा को ग्रहण किया है कि मानव यदि चाहे तो मानव बुद्ध की तरह बुद्धत्व प्राप्त कर सकता है। हमें बुद्धत्व प्राप्त करने के प्रयास करने चाहिए।

हाल ही में मुझे कुछ अन्य साथियों के साथ जापान में शिचिमेन्ज़ान ट्रेनिंग में भाग लेने का सुअवसर प्राप्त हुआ। भारत से हम छः सदस्य यानि श्री सुशील दहिया, श्री एन. एस. रावत, श्री वी. एन. मेहता, श्री राम मूरत, श्री योगेश प्रधान और मैं थे। शिचिमेन्ज़ान पहाड़ की ऊंचाई इतनी होगी इसका मुझे लेशमात्र भी आभास नहीं था। मैं भारत में राजगीर स्थित गृद्धकूट पर्वत पर लगभग 10 बार गया हूँ और लगभग 300-400 लोगों को इस स्थान का भ्रमण भी कराया है। मगर मुझे कभी भी यहां इतनी परेशानी महसूस नहीं हुई जितनी शिचिमेन्ज़ान पहाड़ पर चढ़ने पर महसूस हुई। मेरी सांसे बेहद तेज़ हो गईं तथा पसीना आकर शरीर ठंडा हो गया था। शरीर में पानी की कमी भी महसूस हो रही थी, क्योंकि पहाड़ पर चढ़ने जाते हुए पानी ले जाना मना था। शरीर में ऐसा प्रतीत हो रहा था कहीं ब्रेन हेमरेज या दिल का दौरा न पड़ जाये। मेरी परेशानी को महसूस कर माननीय एच. माईकावा जी ने मुझे पूछा कि क्या अब भी मैं शिचिमेन्ज़ान पहाड़ पर चढ़ना चाहता हूँ। मैंने उत्तर दिया, ''हां मुझे चढ़ना है, मैं धीरे-धीरे चढ़ सकता हूँ।'' फिर तो माननीय माईकावा जी, साथ में सुशील दाहिया जी व एक युवती हमारे साथ-साथ चलते रहे। माईकावा जी ने कहा कि मुंह से 'नमो म्यो होरेंगे क्यो' बोलते हुए बार बार चैन्टिंग करते रहो, साथ ही रुकने भर संकल्प भी दिलाते रहे। और मैं माईकावा जी के पीछे-पीछे पहाड़ पर चढ़ता चला गया, और अन्य लोगों से लगभग एक घण्टा से कुछ कम पीछे हम शिचिमेन्ज़ान पहाड़ पर चढ़ ही गये। जहाँ शरीर की हालत इतनी खराब थी कि चढ़ना मुश्किल हो रहा था, वहां माननीय माईकावा जी के बताये गये चैन्टिंग के प्रयास से मुझे शरीर में शक्ति मिलती रही और मैं शिचिमेन्ज़ान ट्रेनिंग को पार कर गया। कुछ मैं भी प्रयासरत रहा और कुछ माननीय माईकावा जी भी मुझे सफल बनाने में प्रयासरत रहे।

इसी प्रकार मैं भी चाहता हूँ कि ग्रामीण क्षेत्र में जो लोग अपनी ज़िन्दगी को केवल जानवर समान व्यतीत कर रहे हैं मैं उनको मानव होने का एहसास दिलाकर उन्हें मानवीय ज़िन्दगी व्यतीत करने का प्रयास कराना चाहता हूँ। प्रत्येक व्यक्ति जिसने इस पृथ्वी पर जन्म लिया हो उसे अपने पूर्वजों का

व्यक्तिगत अनुभव

उपकार मानना चाहिए इसलिए मैं घर घर में सोकाइम्यो लगवाना चाहता हूँ। और सभी को सोकाइम्यो लगवाना चाहिए तथा अपने परिवार की ख़ुशहाली के लिए अपने दिमाग, शरीर व समय का पूरा-पूरा प्रयोग करना चाहिए। दिमाग का पूरा-पूरा प्रयोग करने से ठगी से बचेंगे तथा बर्बादी भी रुकेगी। जैसे हम बेकार के त्यौहार व संस्कार के नाम पर समय व धन बर्बाद करते हैं हम दिमाग के प्रयोग से अपने परिवार व बच्चों की शिक्षा व सफ़ाई पर अधिक ध्यान देंगे।

साथ ही हम पड़ोसी, रिश्तेदारों को अच्छी शिक्षा को ले मिचिबिकी करना बतायेंगे तो मित्रता बढ़ती जायेगी साथ ही मित्रता बढ़ने से शांति बनेगी। अन्ततः आसपास, गाँव-महल्ला, प्रदेश, देश-विदेश और अंततः पूरे संसार में शांति होगी, यही हमारा अंतिम लक्ष्य है। हम अपनी कमियों को छोड़कर अपने शरीर, दिमाग व समय का सही व पूरा-पूरा प्रयोग कर लें तथा बुद्ध की बतायी गयी शिक्षा - चार आर्य सत्य, अष्टांग मार्ग, दस परिमिताओं, आदि - को अपने शरीर पर अमल करें तो अरहत के साथ साथ बुद्धत्व भी प्राप्त कर सकते हैं तथा लाखों करोड़ों लोगों का पुनः पुनः कल्याण कर सकते हैं। अंत में मैं रेयूकाई परिवार व सभी मानवों के कल्याण की मंगल कामना करता हूँ। मैं रेयूकाई के उपकार को हमेशा याद करता रहूँगा।

रेयूकाई के द्वारा प्राप्त शिक्षाओं से मेरे अन्दर कई परिवर्तन आये हैं जिसमें सबसे अधिक दूसरों की बुराई, आरोप देखने व करने की बजाय मेरे परिवार के अन्दर कितनी व कहाँ-कहाँ कमी है उन कमियों को जानकर उन्हें दूर करने का प्रयास करता हूँ। ऐसा ही और सदस्यों को भी बताता हूँ कि अपनी कमी को पहले पहचानो और उसे दूर करो।

दूसरे, अपनी कमायी हुई धन-सम्पत्ति से अपने से कमज़ोर की जितनी सहायता व सहयोग हो सके उसे करो। मैं स्वयँ भी ऐसा करता हूँ। जैसे गत वर्ष अगस्त 2006 में मिचिबिकी व प्रशिक्षण के लिए मैं ज़िला अम्बेडकर नगर कूचा जलानपूर में अशोक कुमार वर्मा के पास था। उसी समय मेरे पुराने सदस्य अशर्फीलाल भी वहां बैठे बातचीत कर रहे थे कि तभी अशर्फीलाल की माताजी वहां आयीं। लगभग 50-60 वर्ष की वृद्ध महिला थीं, जिनकी आँखो का कहीं पर मुफ़्त आपरेशन तो हो गया था लेकिन उनके लिए मुफ़्त चश्मा नहीं मिल पाया था। अशर्फीलाल जी की परिवारिक स्थिति अत्यधिक खराब थी, दवाओं व चिकित्सा के अभाव में 12-14 वर्ष का उनका बड़ा लड़का मर चुका था। चश्मा बनवाने के लिए 150 रु. तक पास नहीं थे। मेरे सामने यह मामला आया तो मैंने अपने सदस्य की परेशानी दूर करते हुए अपनी जेब से 150 रु. देकर चश्मा बनवाया। उससे वहीं पर उपस्थित काफ़ी लोग प्रभावित हुए। इस वर्ष मैंने मुफ़्त दवा-वितरण व चश्मा-वितरण का एक-एक दिन का आयोजन जलालपुर व सिकन्दरपुर ज़िले में किया। वहाँ पर लगभग 20 लोगों ने चश्मा प्राप्त किया जो वास्तव में गरीब व्यक्ति थे, और उन्हें चश्मे की बेहद आवश्यक्ता थी।

इसी प्रकार अलीगढ़ शहर में एक महिला का पति जुआरी व शराबी था। महिला के आठ माह का गर्भ था। उसे दर्द की शिकायत व सांसे तकलीफ़ दे रही थी। सरकारी अस्पताल में स्थान नहीं था। और उस महिला के पास खाने तक के लिए आटा व एक भी रुपया नहीं था। 21 मई 2007 को मनोज कुमार नामक एक व्यक्ति ने मुझसे सम्पर्क साधा। मैं उन दिनों अम्बेडकर नगर से आकर रिपोर्ट तैयार कर रहा था क्योंकि 25 मई को जापान जाने की तैयारी थी। उसने उस महिला का हाल बताया तो मुझसे रहा नहीं गया। मैंने पांच हज़ार रुपये देकर अपनी पत्नि विमलेश सिंह बौद्ध को मनोज कुमार के साथ भेजा। प्राईवेट नर्सिंग होम में अल्ट्रासाउण्ड व अन्य चैक अप कराये। तब ज्ञात हुआ कि सीने में पानी भर गया है। डाक्टर ने इन्जैक्शन से पानी निकाला व कुछ दवाओं से सुखाया और तब उसकी जान बच सकी। इस कार्य से वह महिला, मनोजकुमार व अन्य व्यक्ति भी प्रभावित हुए, और हमें अपना मानवीय कर्त्तव्य पूरा करने का अवसर मिला।

इसी प्रकार जनपद बुलन्दशहर के खुर्जा शहर में बोधिसत्व डा. बी. आर. अम्बेडकर स्कूल है, जहाँ पर कई वर्षों से वृक्ष लगाने का प्रयास असफल रहा। लेकिन मैंने वार्ता कर वृक्ष लगाने व उनको पानी देने व सुरक्षा का प्रयास किया। जिसमें प्रबन्ध तन्त्र के सहयोग से व अशोक कुमार पिपिल की भागदौड़ से पहले तारफ़शी की गयी, पानी के लिए बिजली की मोटर लगायी गयी, बिजली के लिए जैनरेटर लिया गया। तब जाकर माननीय यूकीए माईकावाजी के द्वारा 4 अगस्त 2003 में वृक्षारोपण कर उद्घाटन किया गया। साथ ही जापान के भन्ते जी माननीय आर्य नागार्जुन सुरईससई के साथ-साथ बड़े-बड़े अधिकारीयों, मुख्य विकास अधिकारी आदि ने भी वृक्षारोपण किया। आज वहाँ पर लगभग 10 पेड़ छाया दे रहे हैं, जहाँ पर एक की भी आशा नहीं थी, वहाँ पर आज वृक्षों की मौजूदगी में जापान के प्रतिनिधि ने कार्यक्रम में भाग लेकर वहाँ के लोगों को प्रभावित किया।

ऐसा ही रेयूकाई के द्वारा आई. डी. पी. कार्यक्रम में भाग लेने वालों को भगवान बुद्ध के तीर्थ स्थल का धम्म दर्शन करने का काम मिला। आई. डी. पी. से काफ़ी लोग प्रभावित है व रेयूकाई का उपकार मानते हैं।

मैं अपने सदस्यों की अधिक से अधिक समस्याओं के निराकरण का प्रयास करता हूँ। रेयूकाई कार्यक्रम की सहायता के बगैर अपनी कमाई धन-सम्पत्ति से जगह-जगह गांव-गांव, शहर-शहर जाकर मिचिबिकी करता हूँ। मिचिबिकी के समय 50-60 व्यक्ति से लेकर 1000-1200 व्यक्ति मिचिबिकी में आते हैं। अच्छी-अच्छी बातों से प्रभावित होते हैं एवं रेयूकाई संस्था का धन्यवाद करते हैं। अन्य संस्थाओं के पदाधिकारी भी रेयूकाई से प्रभावित हैं। मैं अपने सदस्यों की उनके विकास के लिए काफ़ी देखभाल करता हूँ। मेरा क्षेत्र भी काफ़ी बड़ा है और उत्तर प्रदेश के लगभग 20 जनपद, हरियाणा, दिल्ली, गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र आदि स्थानों तक फैला है।

भविष्य में रेयूकाई का नेटवर्क इतना विशाल होगा जितना भगवान बुद्ध की शिक्षाओं से प्रभावित जनमानस विश्व में फैल गया है। उसी प्रकार रेयूकाई विश्व में सर्वोच्च संस्था होगी जो शांति व एक दूसरे का विकास व मित्रता करने वाली होगी।

धन्यवाद।

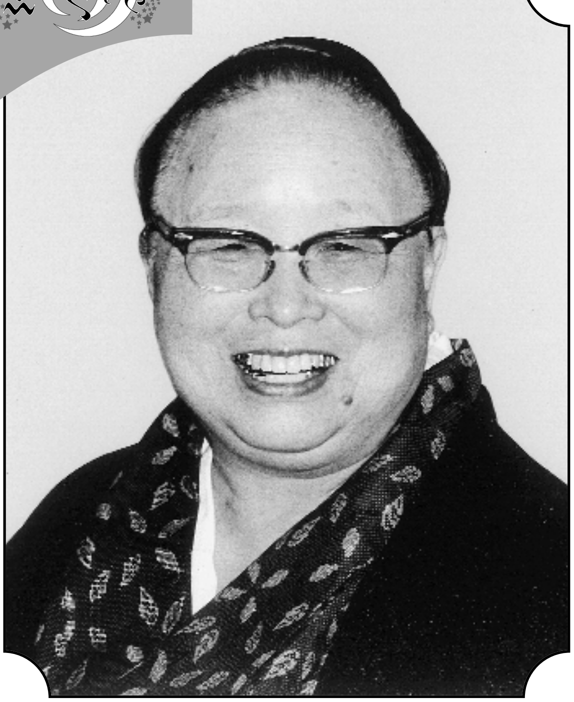

श्रीमति किमी कोतानी के विचार

निजी भेंट करना सदस्यों को पोषण देने की एक रीत है। प्रदान करने की यह प्रक्रिया बिना पुरस्कार की इच्छा किए बिना की जानी चाहिए।

बुद्ध की शक्तियां व पुण्यफल, देवता, और हमारे पूर्वज अपरिमेय हैं। क्योंकि जब तक आप आध्यात्मिक संसार के लिए सूत्रजाप नहीं करेंगे अथवा जब तक आप मिचिबिकी के बारे में बोलने के बजाय उसे वस्तुतः करेंगे नहीं, आप यह नहीं जान पाएंगे कि उसमें कितना प्रयास शामिल है। यदि आप किसी से केवल आवेदन भरवाएंगे तो उसे रेयुकाई के बारे में और कुछ नहीं पता चलेगा सिवाय इसके कि ''रेयुकाई की मूल अवधारणा सेन्ज़ो-कूयो है।'' आपको उससे भेंट करनी ही होगी।

निजी भेंट करना सदस्यों को पोषण देने की एक रीत है। उस सदस्य को प्रयोग में उत्थान करने के लिए बारंबार उससे भेंट करें और धीरे-धीरे वह जाप करने, पूर्वजों के नाम एकत्रित करने और स्वयं ही बैठक में उपस्थित होने लगेगा/लगेगी। रेयुकाई में इसे प्रदान करने की प्रक्रिया कहा जाता है। इसमें धन नहीं लिया/दिया जाता। प्रदान करने की यह प्रक्रिया बिना पुरस्कार की इच्छा किए बिना की जानी चाहिए।

रेयूकाई अतुलनीय कैसे है ?

हाल के समय में वैवाहिक जीवन छोड़कर भाग जाने वाले पतियों और पत्नियों ने परिवारों को तबाह किया है। और तो और, परिवार की स्थिति पर प्रश्नचिह्न डालने वाली घटनाएं जैसे वृद्धों की एकाकी मृत्यु, अथवा भगौड़े युवा, आत्महत्याएं व युवाओं द्वारा की गई हत्याएं बढ़ोत्तरी पर हैं। ये बातें वर्तमान संसार के लिए संकटकारी समस्याएं बन गई हैं।

रेयुकाई ने नवंबर के द्वितीय रविवार को 'परिवार दिवस' के रूप में मनाने का 1973 में निर्णय लिया। और तब से उसने 'परिवार दिवस' को बृहत रूप से मनाने का संस्था को समर्थन दिया है। यह समर्थन रेयुकाई की शिक्षाओं पर आधारित है कि परिवार वह है जिसमें बच्चे अपने माता-पिता से उतना ही स्नेह रखते हों जितना कि माता-पिता अपने बच्चों की देखभाल करते हों, तथा परिवार के सभी सदस्य जीवन की धारा का बोध रखते हुए एक-दूसरे के लिए सहयोग व समर्थन की भावना लिए हुए हों।

हम आज अपने माता-पिता और अपने पूर्वजों के लिए जीते हैं। इस वास्तविक्ता पर ध्यान दिए बिना हम हमारे द्वारा सामना की जा रही समस्याओं का उत्तम समाधान नहीं निकाल सकते।

एक शांतिपूर्ण व प्रसन्न परिवार तभी बनाया जा सकता है जब उसके सदस्य इस बात को स्वीकार करें और अपने भीतर खोजते हुए अपने व्यवहार को सही करें।

आओ जापानी सीखें - 15

<u>सामान्य संवाद</u>

कोरे वा इन्दो देसु..यह भारत है।
इन्दो वा हीरोइ देसु ....भारत विशाल है।
इन्दो वा एशिया ताइरिकु नो इचिबान मिनामि नि अरिमासु ....भारत एशिया महाद्वीप के दक्षिणी भाग में स्थित है।
इन्दो नि वा निजुहाचि नो शु गा अरिमासु...भारत में अट्‌ठाइस राज्य हैं।
सेइफु कारा शोनिन सरेता गेंगो वा निजु नि अरिमासु...सरकार ने बाईस भाषाओं को मान्यता दी है।
नानात्सु इजो नो शुक्यो गा अरिमासु ....यहां सात से अधिक धर्म हैं।
क्यो वा निसेन नाना नेन हाचि गात्सु जुगो निचि देसु..आज 15 अगस्त 2007 है।
क्यो वा इन्दो नो दोकुरिस्तु किनेन बि देसु...आज भारत का स्वतंत्रता दिवस है।
रोकुजु नेन माइ नि इगिरिसु कारा दोकुरित्सु सिमाशिता..भारत ने यू.के. से साठ वर्ष पूर्व स्वतंत्रता पाई।
सोरे वो ओइवाइ शिते इन्दो ज़ेन्ताइ नो हितोबितो गा तानोशिमेरु हि देसु.......सभी भारतीय आज का दिन मनाते हैं और आनंद लेते हैं।

<u>शब्दावली</u>

इन्दो...भारत
अरिमासु ....स्थित
हिरोइ...विशाल
निजुहाचि ....अट्‌ठाईस
गेंगो ....भाषा
शोनिन..मान्यता प्राप्त
शुक्यो ....धर्म
हाचि गात्सु ....अगस्त
दोकुरित्सु किनेन बि ....स्वतंत्रता दिवस
माइ ....पहले
सोरे वा ....वह है
ज़ेन्ताइ ....सभी
तानोशिमेरु ....प्रसन्न होना
इचिबान...सबसे अधिक
शु ....राज्य
मिनामि ....दक्षिण
सेइफु ....सरकार
क्यो वा ....आज है
निजुनि ....बाईस
निसेन नाना ....दो हज़ार सात
जुगो निचि ....पंद्रहवां दिन
रोकुजु नेन...साठ वर्ष
इगिरिसु...यू.के.
ओइवाइ..उत्सव
हितोबितो ....लोग
नेन ....वर्ष

जापानी बालाएं

हम एक हैं

रेयूकाई अभ्यास की प्रतिज्ञा

रेयूकाई के संस्थापक, श्रध्देय श्री काकूतारो कूबो जी ने कमल-सूत्र पर आधारित विश्व भर के मानव के लिये ऐसी शिक्षाओं को व्यवस्थित किया जिससे लोग बोधिसत्व अभ्यास पर चल सकें। उन्होंने समाज के सुधार और उसे श्रेयस्कर बनाने के लिये एक मार्ग सुझाया और कहा "अनुकम्पापूर्वक ऐसा कर दें कि इन्हीं सच्चरित्र गुणों के बल से हम और सब प्राणी अग्रबोधि प्राप्त कर सकें तथा इस सद्धर्म का सर्वत्र प्रचार हो जाये।"

रेयूकाई की प्रथम प्रधान श्रीमति किमी कोतानी ने बुध्दत्व संसार के महत्व को पहचाना और उसके प्रसार के लिये कहा "अगर सभी सदस्यों के परिवारजन रेयूकाई की शिक्षाओं का अभ्यास करें, तब उनकी संत्तति को अच्छा इंसान बनने का आशीर्वाद प्राप्त होगा और वे शांतिपूर्ण और आनन्दमय जीवन व्यतीत कर सकेंगे। अगर इस तरह से प्रत्येक परिवार में होगा तभी बुध्दत्व संसार का निर्माण होगा।

माता-पिता और पूर्वजों के प्रति, गुरूओं के प्रति, देश के प्रति और सिध्दांतों के प्रति, हम इन चार कृतज्ञताओं के ॠणी और अनुगृहीत हैं, जिसे पूरा करके हमारा विश्व शांति के लिये इससे बेहतर सहयोग और कुछ नहीं हो सकता। हम रेयूकाई के सदस्य, हमारे संस्थापकों और वरिष्ठ सदस्यों द्वारा प्राप्त महान उपलब्धियों का पालन करते हुये अपने कार्यो द्वारा एकत्रित किये गुणों से हम विश्व शांति के लिये प्रयत्न कर सकते हैं।

इन्हीं कारणों से हम प्रतिज्ञा करते हैं कि :

1. पूर्वज स्मरण और मिचिबिकी का अभ्यास करेंगे।
2. खुशहाल परिवार और घर के महत्व पर ज़ोर देंगे व इससे प्राप्त उपलब्धियों का प्रसार करेंगे।
3. शिक्षाओं का अभ्यास करेंगे व समाज व समुदाय के कल्याण हेतु कार्य करेंगे।

जिस तरह हम अपनी प्रगति, दूसरों के ज्ञान और बेहतर समाज के लिये प्रयत्न करते हैं, उसी तरह से हम विश्व शांति स्थापित करने का प्रयत्न करेंगे।

आध्यात्मिक सहचर्य संस्था

सी-2/3, सफदरजंग डेवेलपमेंट एरिया, नई दिल्ली 110016 (इंडिया)

दूरभाष : +91-11-26522039 • टेलिफैक्स : +91-11-26522040

ई-मेल : info@reiyukaiindia.org • वेबसाईट : http://www.reiyukaiindia.org

डिज़ाइन व मुद्रण : क्रिएटिव कनैक्शन्स (98110-76606) • ईमेल: rajinderprabhakar@gmail.com